

## माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

प्रवेशिका परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In E	English	Tallar	
(In Figures)			
(In Words)			•
			•
परीक्षार्थी का नामांव	क हिन्दी में	- (	,
शब्दों में			
		107	
6			

नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम -	हिन्दी ू	अंग्रेजी	~
विषय	परकृत ठ	ए।कार्ग	
परीक्षा का दिन	No. of the second secon		
दिनांक		4, (+,+++	

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

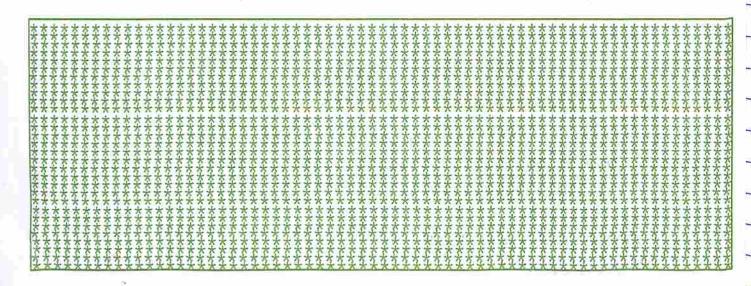
परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

- (2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम
- में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
- (3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

प्रश्नों की	-	प्रश्नों की	
क्रम	प्राप्तांक ्	क्रम	प्राप्तांक
संख्या	7	संख्या	
1		19	
2	1 - 1	20	
3		21	
4	1 11	22	
5		23	
6		24	
7	20	25	277
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	-
13		31	-
14	-		-
15		प्राप्त अंकों (Rou	का कुल ये ndoff)
16	T.	अंकों में	शब्दों में

परीक्षक	के	हस्ताक्षर	संकेतांक	
---------	----	-----------	----------	--

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017



## परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

- समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में 1. अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
- प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें। 2.
- प्रश्न-पत्र हल करने के प्रश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" 3. लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्टों को तिरछी लाईन से काटें।
- निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
  - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
- (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्टों को फाड़ें नहीं। उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुरितका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं है तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
- परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं। (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस-पास कोई
- अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें। (v) अपनी उत्तर पुस्तिका / ग्राफ / मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है,
- अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सोंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
- उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड जरारा का क्रमानुसार एक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न रपराप पराक्षक का । जाना रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्टों पर करें तथा तिरछी रेखा छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्टों पर करें तथा तिरछी रेखा
- सं कार्ट। जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें। जहाँ तक हो सक अरन कर जान कर जात कर
- भाषा विषया के। व्याञ्चल (अन्तर / विरोधामास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना किसी भी प्रकार की त्रुटि / अन्तर / विरोधामास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये ।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
(SEY P	1.	अवसान स्पेसा
	2.	उनीड आपः
<u></u> †	۷.	
_	3.	रिकारान्त उक्तरान्तरच वार्षे यत् स्त्रीर्ते विकल्पेन नदी सैसकी
	S	भवतः
	Patition .	ांशी स्पर्वनाम स्थानम "
	Ч.	
		यः भी
	5.	
		इदम् शब्दस्य मः इद् तस्य दक्तारस्य स्थाने यकारादेशः भवति।
	6.	देदम् शब्दस्य मः इद् तस्य दक्षारस्य स्थान यकारादशः भवाते।
	٦.	अजाधतष्राप्
-		
	8.	उन्ह प्रयमः
1.10		Q AND
	9.	वर्थ प्रातर् जागरकीयम् ।
	9	
		वदाति
	0.	
		टाइ सिड सामितात्स्याः
-	<u> </u>	
-		



	2
1.2	सर्वनाम स्थान परे स्त्रीत्व विवक्षार्यां याट् आगमः भवाति
	नपंरमकारच => नपंरमकात अङ्गता परस्य औ स्थाने
13.	न्पुंसकार्य => नपुंसकात अङ्गाता परस्य औ स्थाने । अतियाः भवति।
14.	होट:
15:	नहीं धः -> नह शब्दरम् मः हमार तस्य स्थाने धकारादेशः भगति। क्रांनि परे पदाले। उदाहरणम् > उपानत् - उपानद्
16.	अहन् शण्दरम् नकारर-परणीने दुं आदेशो भवाते।
17.	अन्तरेण => विमा नाना => बहु प्रकाराः / भिन्ते-।भिन्ते
18.	पुरा ३ प्राचीनकाले अ ३ रम्ह्रां चेत => अनव्यतिपती
19.	एडवचनम् द्विचनम् बहुवचनम् अहुवचनम् उपस्त स्तः स्पर्वे
	मध्यम्पुः आसी स्थाः स्थाः स्थाः स्माः



क द्वारा	प्रश्न	
त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
, niedła s	<del>+9</del> :	रिक्र कर्मानी हिंदाचनी वहुवचनी
		प्रधान अवति अवति
1		महम्मा भून अवस
71		उत्पाद्ध भागा भागा भागा ।
19.1	9.	एक्वजनम् द्विवजनम् बहुवजनम्
	30.	ET THE PROPERTY OF THE REAL PROPERTY OF THE PARTY OF THE
	را اجر	त्रमम् परन्त वदर्य स्थाम् वदर्यः
	-	THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH
		The Control of the Co
		स्वारीनि सर्वनामानि > सर्वादीनि शब्द स्वरुपानि
	21.	स्वादानि स्वरा
		सर्वनाम सँगानि रमः।
I. Pr	Y 1	सर्व आदि शब्दानी सर्वादीनि सर्वनामानि अनेन सूत्रीन
	- 1	स्वनाम स्मला भवति।
		उदाहरणम => सर्वः , सर्वरमे ।
-		TATALAN TATALAN PARA
		सर्व शण्दात अधिवद्धातुरप्रत्यमः प्रातिपरिक्रम्"
ilk A III		्र न्यानिपहित्र समायां "सविद्यानि सवनामानि"
1 T	<b>3</b>	सर्व शब्दात अभवति अधेवद्धातुर प्रत्यमः अपिपरिक्रमा अति स्मूनेग प्रातिपरिक स्वामां स्वितिमि सर्वनामानि" अति स्मूनेग सर्वनाम संस्थायां 'स्वीजसमीट् 'अति सूनेग विभवित
	,	इति स्मूरोग सर्वेताम स्वाजसमार् डात स्नूराण विद्यावत
1.04		कते ।
		0 , " 0
		रमा इति शब्दात् अर्धनद्यानुर् प्रत्यमः प्रातिपहित
-	90	Votet -7
		अमान्त्रिसंड अमान्त्रसंड सी अमान अम्माङ सोरम् वर्ष हिस्
		अपार्किस्ड अपा रा विभवती रुगा गरा अपि कार्
		र्भाम्भाराङ्क्या से विभवते रमा दा अति काते रूपते विभवते रमा दा अति काते रूपते विभवते से विभवते रमा देश काते रमा
		'सुर' अति सूत्रेण टकाल व्यवनाः तस्य गाप उत्पन्न कोप
		(100)



परीक्षक द्वारा प्रक्त अंक संख्या केते रमा + आं इत्यक्धाया पाडापः इति स्त्रीका पाट् अभिमे इते 'रमा + याट + उना इति जाते - हेलिल्यम् ' इति स्त्रीका स्त्री देशा र स्वती क्रिका स्त्री देशा र स्वती क्रिका स्त्री रमा + अप इति स्वती क्रिका स्त्री देशिया इति रमकोदीकी इति रमकोदीकी इति रमकोदीकी इति रमकोदीकी इति रमकोदीकी स्त्री रमकोदीकी स्त्र	
स्विद्वीनस्व अविद्यात अधित स्वीदीनस्व अधित स्वादीनस्व अधित स्वीदीनस्व अधित स्वीदिन्त स्वीदिन स्वीदि	



रीक्षक द्वारा प्रश्न प्रतिक्षार्थ प्रमा प्रश्न प्रतिक्षार्थ प्रमाण प्रतिक्षार्थ प्रमाण प्रमाण प्रतिक्षार्थ प्रमाण	
बाते सूत्रेण प्रातिपिक स्पैनायाँ 'स्वीनसमें बल्यादिना सूत्रेण इस् अत्यय क्रेने स्त्री + उत्न इति व्यादिती इति सूत्रेण उस्य ब्रह्मसन्तायाँ 'तस्य ली	रि.
इत्यनेन लोप हते 'स्ही म् अस्' 'स्हिपा: ' इति स्नू ने उपर अपि अस्' अस्' उपर अपि च हते सिप्तय में अस्' वर्ण मिलिता 'स्निय स् वर्ण उत्यवस्थाया स्परमु को उत्यवस्थाया स्परमु को उत्यवस्थाया स्परमु को उत्यवस्थाया स्परमु को वर्ण अस्तिय र अति व्य ' (भिरामोडवस्नाम ' उसक्यानस्म् स्वाय ' रवस्वस्थानयो किस् उत्यनेन रेफ्स्य विसर्ग हते सिन्नयः अति रुपं सिद्ध व	के: ति जिनीयः
र्थानेन के सान् बाल्यात् कृतिहितसमासाक्य वित्त सूर्ति वित्त स्वाधिक स्वेति वित्त स्वाधिक स्वेति वित्त स्वाधिक स्	होग ज्यान +आ स्मृहोग ग
अपि गुला: ' अत्योगन गुले हते सामेन हति हुएँ सिंहम् बारिली => वारिन् इति स्ववातः ' अर्धवत अस्थातुर प्रयापः । अत्योग प्रातिपित्व स्वापः ' स्वीमसमीट् र इत्या स्पूत्रेल प्रमा दिवसने औ अत्योग हते वारिन् + औ अनुबन्ध को नारिन् + औ उत्यवस्थामां ' नपुंस्तकाच्यं अति स्पूत्रेल औ अतिश हते वारिन् + शी अति जाते । लोइ। पुरा अतिश हते वारिन् + शी अति जाते । लोइ।	जातिपादिस् <del>र्वे</del>



परीक्षक द्वारा प्रश्न प्रदत्त अंक संख्या	उति सूत्रेण शकारस्य इत्संसाः 'तस्य लीपः 'इत्यनेन लोप हते
	'वारिन' + इ' इति रिधती वर्ग मिलिता विरिनी
	उत्यक्त्यायाँ उत्रर्भुष्वाङ्गुम्व्यवायेड्पि वित सूत्रेष नस्प णत्वे कृते वारिणी वति स्वतं सिद्धम्।
	ठाले बते 'तारिकी' अति रूपं सिदमा
	THE STATE OF THE S
24(4	उपानत् => उपानह् उति शल्दात् "कृतद्वितसमासाइन्" इति सूत्रेण प्रातिपंदिक संसायो स्वीनसमीर्!
	इति स्राठी आतपादक सराया स्वीनसमिट्!
1 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 1	उत्यादिना सूनेण प्रथमें उत्यमे सु 'प्रत्यमे उपानह न सु
	310 MIN 2105 [74-41] KH SU 314 HALL ST.
	इत्संसा तस्य लोपः 'उत्यमेन लोप कृते उपानह म् स् कार्त
81022	रिधती नहीं उति सत्रेण हकारस्य उना
BSFR-16	कर्त हैपानधा भा ( उत्पात्मामा । उत्पात्मा ):
	र्शत संत्रण होबागा। स्थान त्राले द्यार न
	20010 अगरे 6414, तरात इत्तान सामा
	लीप कर्त त्यान्त्र उपान्त्र उत्यत्रशास्त्रा प्राप्त
	उत्योग दकारस्य स्थाने तकते उपानत्। (वाडनसानि) चलिताने उपानद् उति दुर्प सिहुम्।
	चलाभावे उपानद उति उप सिद्धमा
-	
	- चत्रम् : => चेतुर् शब्दात् अर्धवद्दातुर अत्ययः - प्रातिपदिकम् " अति स्मेनेग - पातिपदिक संसमा
(%)	नारिपदिक्तम " उति स्पेरीला पारि १
	ं जीन्यमीर " उत्याहिना अरोता वाम पान स्तिमा
	क्लाम्पाट वरनायना रहा अत्यय हते
	न्तर् + लस् अत लात युट्ट अत स्मेन जनारस्य
	उत्सम तरम लापः अत्यनन लाप क्रेंत चतुर् अस
	'स्वीनसमीट्नं' डत्यादिना स्ट्रिश प्रमा प्रत्ये हते चतुर् + प्रस् अति प्राते चुट्टं अति स्ट्रिश प्रकारस्य इत्यमा तस्य लोपः उत्यनेन लोप स्ते चतुर् अस् उति प्रते 'सुङ्गपुरम्बस्य 'छति स्ट्रिश स्वनाम स्वान



	प्रश्न संख्या	रंसामा 'चतुर्नहहोरामुदान्तः' वति सूत्रेण अगम् आणमः प्राप्ति 'तस्य निषेषे कृते प्रिचतुरीः स्हियां निसृचतुरम् वतस्य वति सूत्रेण
	-7	'तस्य निषेषे कृते प्रिचतुरीः स्तियां ग्रीसृचत्सृ अति सूत्रेग
· ·		चतुर् शब्दस्य स्थोन चतस् आवेशे हते चतस् म अस् उत्यवस्यार्था इकोयावि इति सूत्तेण याणे हते चतस्र म अस्
- 100		इति जोते म बर्ग मिलिला चतस् मस् इति स्थिती
-		रंपराजधीराः उत्यमि सरम् रुखे अनुबन्ध लोपे चतस् +र
		इति रिष्यती विशमोऽवसानमं इति स्त्रीन अवसानसँखायां रवरवसानयोकिंग्जनीयः इति स्त्रीन रेपस्य विसर्गहते
		ेचत्स्य इति रुप सिद्धम्।
- X-V.	= 1	THE TAXABLE TO A PURIOUS OF THE PARTY OF THE
		THE PARTY OF THE P
P	25.	बाला के बाल इति शब्दात् आतिपदिकात् 'अनाद्यतण्याप्' इति सूत्रेवं राप् प्रत्येय हते बालं न राप् इति जाते
	۹.	'खलत्यम' '- बति सूत्रेण पमारसम् उत्सीता क' चुट्ट' बति सूत्रेण टमारस्य बत्सीताः तस्य लोपः' बत्यनेन लोप् हते बाल र छा।
PSust 2	3+	उत्यवराणां अन् सवर्व देशि इति सूत्रेण सवर्ग दीर्थ इते
T sort	151	बाला डित प्रति स्वीम्समीटि डिति सूत्रेण छपमेड वर्षने स्
		अत्ययं इते व्याला र सु इति स्थिती 'अपवेशेऽजनु नासि इहते ' अति सूत्रेण दुकारस्य इत्सेंसा 'तस्य लोगः 'अत्यनेन लोग इते
		बाला + रन् इत्मत्रयाया अपूर्व एकाल प्रत्यमः इति स्मेतेण
		उति स्प्रेण उद्गारस्य इत्सेशा 'तस्य लोपः 'उत्पनन लोप क्रेत बाला म स् इत्मत्रयाया अपूबत एकाल प्रत्यमः इति स्प्रेनेण उपपृक्त स्रीताया 'टल्ल्याक्स्योदीक्रीत्स्मु तिस्य प्रवते हल् 'उति स्प्रेण सस्य लोपे बाला इति स्प्री सिहम्।
		भूत्रण सस्प् लाग जारुप द्वारा ।
717-1		
		4,161

परीक्ष प्रदत्त



ACCOUNTY DESCRIPTION	श्न ख्या	०० परीक्षार्थी उत्तर
7441 5141 (	1	नतेरी => नतेर डाते शब्दात अधीवत अधातुर अत्पयः
		इति सूने पातिपदिक सैंसायां े रिड्दाण्य द्वय -
161		-सन्दर्भात्रचत्य प्रक्ता के वर्षाः इति स्पत्रेन की प
NI.T		अत्यये हते नर्तम् । उनिप 'हलहत्यम् दितिसूत्रेण प्रारस्य इत्स्त्राः लश्चन्ति ' दति सूत्रेण दस्य इत्स्त्रार्या
		Series Sold Control State Stat
		उत्पर्माः लरादवताद्वत ३१त सूत्रण उस्प इत्स्वाया
	per l	'सरम् लीप: रत्यमेन लीप कते नतिक । ई इति जाते
	124	'याचिम् । इत्यनेन् असंसायी 'यस्योते च' उति सूत्रेण
	1	अमारस्य जीप हते नतम् । इत्यवस्थापा वर्ग
	Н	मिलिला नतेरी अति के जाते रेवीन्समीर 'इत्यादिना'
-		स्त्रीण प्रथमेड्वचने स्त्र प्रत्यम कते नतिकी र स्त्र अनुबन्ध
=	_	लीपे नते ही । स इल्प्बस्थायाँ अपूक्त एकाल प्रत्ययाः
	_	इति स्त्रीण अपृस्त सेलार्या 'हन्ड्यान्म्योदीर्घाद्रमुतिस्यपृष्की
		हल्" उति सूत्रेण स्परम लोगे नती दित रूप सिहम्।
BSP3:16.72018		हल् उत्र स्नुस्त नाप नतमा इति रूप रस्तिम्।
BSER		THE PLANE OF THE PARTY AND THE
		The Astronomy Company of the Astronomy Company
	26.	पुँचीगादाख्याम् => पुंवाचनुम् यः तित्य स्त्रीतिङ्ग शब्दः
	α6.	तरमात डीप प्रत्यम् भवति।
		यः शब्दः पुल्लिङ्गस्य स्त्रीत्निद्रेः प्रमुक्तोः तस्मात् शब्दात्
-		'धुमोगादाख्याम्' अति स्त्रोग 'धुंबद् भावे कीष् अत्ययः
		भवित ।
		यश - जोपी
	/	941 -7
		The same to the first of the same of the s
		जीप अति शब्दात् प्रातिपिकात् 'पुँयोगादाय्याम् अति सूत्रेष्
		की प्रत्ये हते शोप + उरीप इत्यवस्थामा अनुबन्ध लीवे
	-	कीय प्रत्यमें हते जोष + उरीय क्रम्यस्थामा अनुबन्ध लोवे जीप + ई उरी जोर 'याचे क्रम्' इति स्तिन असंनार्था
		'ग्रस्मिति च डार्त स्मेनेन उम्हारस्य लीप इते जीप + ६
		'मस्मिति चं डाति सूत्रेन उपतारस्य भी प कते जी प न र् उत्यवस्थायाँ वर्ग सम्मेलनेन जीपी डाते जाते।
Trans.		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·



प्रश्न दादेर्घातोधः = दादेर्घातोहस्य धः स्यात् भाने परेपदाले। संख्या 27. दादि धातुनां हकारस्य स्थाने धकारं स्यात्। अनेन सूत्रेग् दादि धातुनां हकारस्य स्थाने धकारः काल्यगिनां पर पदान्ते । यथा -> धुरु - धुरा दुर् इति शब्दात हतद्दितसमासारमं उति सूत्रेण प्रातिपद्वित्र स्मायां स्वीनसमीर उत्यादिन। सूत्रेण सु उत्यये हते दुर्म स्तु इत्यास्यायां अनुबन्ध लोपे दुर्म स् इति स्थिती दिनि हते दुर्म स्वीन हिन्म हिनम हिन्म हा हते खुष् म्स ट्रालीनशोडली उतिसूत्रेण ध्रामण् हते खुण् स्मारस्य लीप हते वाज्वस्ताने चर्ने हते खुन्-चत्वीभावे धुग डातिर में सिहम अह.(१) — अम् शब्दात् अर्थवदद्यातुर् प्रत्ययः " इतिरन्त्रेण प्रातिपदिम सीमार्या 'स्बीम्समीट ' उत्यादिना स्नूनेण जस्य प्रत्यये किम् मजस्य किमः कः इति स्मूनेण किम्रस्याने क आदेशे हते कम् जस्य 'सुट्ट अतिस्नूनेण जनारस्य इत्सीना तस्य लीपः उत्योनन लीप हते क्रम्अस् अति स्थिता 'पर् तस्य लापः अत्मान एता हाम् आगमे अनुबन्ध लोपे कन् न अस् चतुष्र्यञ्ज्य इति स्मृतेण नुम् आगमे अनुबन्ध लोपे कन् न अस् इति काते साल महत् संयोगस्य इति स्मृतेण उपधाया दीर्घ कृते कान् न अस् क्षित्र स्मृतेण जस रूपाने श्री अदिशे हते अनुबन्ध लोपे कान् १३ वर्ग सम्मेलनेन नानि इति रुपे सिहम।



	10
परीक्षक द्वारा प्रश्न प्रदत्त अंक संख्या	् परीक्षाशी उत्तर
۵.	एते => एत्त् इति श्राष्ट्रात् अपवद्यातुर्वं इति सूत्रेन आतिपिदिनु सीसार्या रूबीनसमीटः इत्यादिना सूत्रेन
	आतिपिक संसायों रूबीनसमीट इत्यादिना सनिन
k = 12. fa	
NI- TIMETER	विशि रतदारि पत्ययंऽऽस्म उति स्पत्रीण स्परं स्वीत्राताला
	नपुरम्माच्य रति स्नेन की स्थान शी आदेश हते
	एत + शी इत्यवर-धार्या लश्च व तिहते 'इति स्नेन
-	शकारस्थ इल्सीला 'तस्यं लोवः इल्पनेन् लोप स्ते एत नर्ड
	उति व्यति आद्गुण उत्यनेन गुणे हते एते अति रूपे सिहमा
The state of the s	या। लाव अतिबीतो, बत्तनम् बीता है। हेप वाप उने सिहिमी
271	
291	रामान् => राम इति शाल्दात् 'अर्धवदद्यातुरु ' इति स्नूत्रेग
3	यातिपादिक कमारा एन्विसिस्समादि उठामिक
BSER-10	314 9011 40 214 + 314 349 610 3
	219 (याप एपल्याम, श्रीप र्निया समार्थिया वर्ष
	त्राताः न (वभन्त) तूरमाः उति रचूराण निषद्ये के
	राम + अस् उत्मक्षिया 'उधमयो पूर्वस्वा, इतिस्तृति
	पुष्सवर्ग देशि हते रामास् अति जाते 'तरमात्हसी नः ।
<del></del>	इत्मवरमार्थी अटक्पवाडनमा दित स्त्रीण नरम
7	प्राप्ते ' पदान्तस्य 'इति स्पेतेण तस्य निष्के उने
	रामान अति रुप सिद्धम।



सक्में => सर्व अति शब्दात् अर्थवद्द्यातुर् अति स्त्रोग हरि: > हिर द्रांत राष्दात् 'अर्धवद छातुरः' इति सूनेण प्रांतिपृद्धि संसायां 'स्तिम्प्रमोटः' इत्यादिना सूनेण सूनेण सु प्रत्ये हते हिर मसु द्रांत जाते 'अपदेश इजन्मासिन्द्रत्ं द्रांति स्मूनेण अग्रस्य इत्येमाः 'तस्य लीए उत्येनेन लीप हते हिर मस् द्रांति स्मूनेण उत्येवस्यायां स्पर्य रुत्वे विसर्गे हते हरि: उति रुपं सिद्धम्। स्या => साखे इति शब्दात ' अर्थवद्धातुरः' इति स्नूनेण अपने अतिपदि उसेताण ' स्वीज समीट ' इति स्नूनेण स्व प्रत्येष कि स्तिपदि उसेताण ' स्वीज समीट ' इति स्नूनेण स्व प्रत्येण में स्ति स्नूनेण अङ्ग्रिण प्रमात्पुल्पम् विश्विस्तवादि अल्ममें उड्डिम् इति स्नूनेण अङ्ग्रिण स्वाम ' क्रह्मान्स्पुरुदंसो उने स्मान्स' इति स्नूनेण अपनाम ति स्वाम अनुबन्ध व्योप य हते स्पर्यन् स्म इति स्थिते ' अपने चाउसम्बद्धी' इति स्नूनेण अपनाम ति स्वाम स्थान चाउसम्बद्धी ' इति स्नूनेण अपने स्वाम होते ' अपने क्रिले प्रत्यम होते स्वाम स्याम स्वाम स



		9
परीक्षक द्वारा प्रश्न प्रदत्त अंक संख्या	० ० प्रीक्षार्थी उत्तर	परीक्षव प्रदत्त
30.	लिट -> लिट्ट उति शब्दात् क्तिहितसमासाश्चित्रति सूतेण	
9	वातपदन्स्सिया स्वामसमाट इत्पादन सम्ब	
1	सु जल्मे हते लिए + सु इति जाते अनुबन्ध लीप	
	सु जत्येये हते लिए + सु इति जति अनुबन्ध लीपे । लिए + स् उत्युबस्थायाँ होठां इति स्नूनेग हकारस्य	
	रूपान दकारे हते ।लेट +स डाते स्थित डाला-	
	स्मार्गाइदर्ग रावि स्मेनेला स्माने इसारे के भी पत	
	इति धाते अपर्व एकाल अत्यम् इति स्पेनेण करान	
	समाया हल्याण्यादिश्यात्माते अति स्मर्गल	
	लोप कर्न लिंड उति जाते वाडक्साने उति महोता	
	विमल्पेन चर्लिकृते लिट् एकम् चलिकाव लिउ	
-	उति रुप सिद्दम।	
88		
R-16/Y2018		_
ISSER	राजा => राजन इति शब्दात 'अर्थवद धातुर' इति स्मूने न	
ನ.	प्रातिपिक सैसामा 'स्वीनसमीर' विस्ति इत्याहित	_
	परील स्म प्रापित निर्मा क्या के स्ट्रांक इत्याहित	_
	सूत्रेण सु प्रत्ये हते रामम् + सु अनुबन्ध लीप	
	राजन् + स् इति जाते 'साल्महतः स्पेरोगारय'	
	डाते स्मूनेण उपन्यामा दीर्घ कृते राजान करने उति	_
	रियती 'नलोप जातिपदिबाल्सप इति सूत्रेग	_
	नमारस्य जोप हत राजा + रन इत्य वस्यायी । 'हल्डः यावश्यादी बिल्सुतिः' इति स्पृत्तेण समारस्य	
TEN BEST S	लीप हते रेजा अति रूप सिहम	_
	लोप हते रेजा अति सुप सिहम्	/
W		

ŧ



बृत्रध्नः => वृत्रह्न इति शब्दात् कृतद्वित समासारूपं क्रिते स्त्रीन समीटः " इत्यादिना स्मेतेषा रास् प्रत्यये हते वृत्रहन् + शस्य इति पति पति त्राम्बतिहिते इति स्मेतेषा राकारस्य इत्यासाया त्रिस्य लीपः वृत्रहन् म अस्य इति पति वित्रहन् म अस्य इति पति वित्रहन् म अस्य इति पति वित्रहन् म अस्य इत्यवस्थाया चित्रहन् इति स्नेति वृत्रहन् म अस्य इत्यवस्थाया चित्रहन् इति स्नेति वृत्रहन् । इति स्नेति वृत्रहन् । इति स्नेस्य इत्यवस्थाया सस्यक्रवे विस्तेष च हते वृत्रहन् इति सुप सिद्धम्। मुम्मद् अतिशब्दातु अधिवद्धातुरः" मुद्मालम् => मुद्दात् श्रातिशिष्टात् अधवद्यातुरः

इति सूत्रेण प्रातिपिट्य स्मायां स्वीनस्मिर्यः

इति सूत्रेण प्रातिपिट्य स्मायां स्वीनस्मिर्यः

इति सूत्रेण प्राति द्वाने आम् अपमे स्वाने आक्रम्

इति जाते साम आक्रम् उति सूत्रेण आम् स्थाने आक्रम्

आगम् इते मुद्दान् सामम् उति स्थिती श्रीकेलोपः

इत्यनम् हते मुद्दान् लीपे इते मुद्दान् स्यानम् इत्यवस्थापां

वर्णसम्मेलनेन मुद्यानम् उति स्रपं सिद्दम् स्पमाप्त